ओम् शान्ति 2-11-12 मधुबन

अव्यक्त मिलन के पहले ग्रुप की दिनचर्या तथा प्राण अव्यक्त बापदादा का मधुर सन्देश

(भारतवासी भाई बहिनों के इस पहले टर्न में करीब 8 हजार भाई बहिनें मधुबन में पहुंचे हुए हैं, सभी ने बहुत अच्छी लगन से मौन भट्ठी की, सभी महारथी भाई बहिनों ने भिन्न-भिन्न विषयों पर क्लासेज कराई। विशेष आज बापदादा के अवतरण दिवस पर तो सभी ने मुख और मन का पूरा मौन रखा हुआ है, ऐसे लग रहा है जैसे पूरा शान्तिवन अव्यक्त वतन बना हुआ है। शाम के समय 5 बजे से योग भट्ठी शुरू हुई, विशेष बड़ी बहिनों ने स्टेज पर बैठकर पावरफुल योग कराया, फिर बापदादा के अवतरण की वीडियो दिखाई गई। उसके बाद सभी दादियों व मुख्य भाईयों ने योग कराया। फिर दादी गुल्जार जी ने अहमदाबाद लोटस हाउस से पूरी सभा को बाबा का सन्देश सुनाया, उसके बाद दादी जानकी जी ने विशेष आये हुए भाई बहिनों के निमित्त अव्यक्त बापदादा द्वारा समय प्रति समय मिली हुई प्रेरणायें पढ़कर सुनाई। फिर सबको टोली दी गई। बापदादा का सन्देश तथा विशेष अव्यक्त महावाक्य आपके पास भेज रहे हैं।)

ओम् शान्ति। आप सबकी सभा को देख बापदादा कितना खुश हो रहा है। आज हम बाबा के पास आप सबका यादप्यार लेते हुए गये, आप सबका यादप्यार दिया और बाबा ने भी सभा को देखा, तो सभा को देख करके बाबा ने सभी को बहुत-बहुत शक्तिशाली और स्नेह भरी दृष्टि दी। एक एक के नयनों में बाबा की याद और सर्व परिवार का स्नेह समाया हुआ था। मैंने बाबा को सुनाया बाबा भिन्न-भिन्न स्थानों से हमारे भाई बहिनें बहुत उमंग-उत्साह से आये हुए हैं, तो बाबा ने कहा बापदादा भी देख रहे हैं सभा को। बहुत सुन्दर सभा लगी हुई है और हर एक के मन में खुशी की लहरें चल रही हैं। हर एक समझता है कि कितना बड़ा हमारा परिवार है। सभी एक दो को देखकरके कितने खुश हो रहे हैं। उसके बाद बाबा ने चारों ओर सभी बच्चों को दृष्टि देते हुए कहा कि आप बच्चे कितने सिकीलधे हो, जो यहाँ पहुंच गये हो। बाबा ने देखा जगह जगह पर मधुबन की लगन लगी हुई है। मधुबन में क्या हो रहा है! मधुबन में क्या हो रहा है! तो बाबा ने सभी को दृष्टि देते हुए कहा कि सदा अपने संगम समय के अमूल्य जन्म को स्मृति में रखते हुए, संगम समय के जन्म में जो प्राप्तियां हुई हैं उन्हें याद रखो। प्राप्तियों को अगर गिनती करो तो कितनी प्राप्तियां हैं! तो बाबा ने कहा रोज़ अपनी प्राप्तियों को दिल में वर्णन करते रहते हो? तो सबके मुख से यही निकला वाह बाबा वाह! वाह संगम का श्रेष्ठ जन्म वाह! सभी ने अपने दिल से यह बोला, तो बाबा ने कहा बाप को भी दिल हुई बच्चों से मिलने की, बच्चों की भी दिल है, अभी मिलेंगे। लेकिन आज यह सन्देश सुनने का गोल्डन चांस है। तो अमृतवेले से लेके सदा अपनी प्राप्तियों को याद करते रहो और लिस्ट निकालो, सोचो तो कितनी प्राप्तियां हैं। एक एक प्राप्ति कितनी अमूल्य है। तो प्राप्तियों को याद करने से बहुत दिल में खुशी होती है। कोई भी चीज़ की प्राप्ति होती है, तो शक्ल कैसे बदल जाती है। तो बाबा ने जो अनेक प्राप्तियां कराई हैं, सुख, शान्ति, प्रेम, आनंद सब बाबा ने दिया है, तो इन सब प्राप्तियों को याद करते हुए उड़ते रहो और उड़ाते रहो। तो बाबा ने बहुत प्यार से सभा को देखा, कहा एक एक रत्न ऐसा है जो बाबा एक एक रत्न की विशेषतायें वर्णन करे तो कितनी लम्बी माला हो जायेगी। बाबा को और परिवार को एक एक रत्न की वैल्यु है और देखा बच्चों को भी अपने लिए वैल्यु है इसलिए अभी सभी को याद देना और प्यार से याद करें मेरा बाबा, प्यारा बाबा, मीठा बाबा तो उड़ने लगेंगे। तो बाबा ने देखा इस सभा में बाबा का सन्देश सुनते भी उड़ रहे हैं, उड़ते रहेंगे और अपने राज्य में पहुंच ही जायेंगे। ओम् शान्ति। ओम् शान्ति।

दादी जानकी जी ने दादी गुल्जार जी को थैंक्स दिया:-

दादी आपने कितना मीठा सन्देश सुनाकर हमारी दिल को पिघला दिया। दादी मैं कुछ बोल नहीं सकती हूँ, लेकिन आपने बाबा का सन्देश सुनाकर इतना सुखमय, शान्ति, प्रेम, आनंदमय बना दिया, सबको स्नेह में समा दिया। थैंक्यू दादी।

(दादी गुल्जार) सारी सभा को बाबा की तरफ से और परिवार की तरफ से बहुत-बहुत याद प्यार।

ओम् शान्ति मधुबन 2-11-12

विशेष अव्यक्त बापदादा के अवतरण दिवस पर – (पिछली अव्यक्त मुरलियों से)

आज प्यार का सागर बाप अपने प्रेम स्वरूप बच्चों से मिलन मना रहे हैं लेकिन ज्ञान सहित प्रेम जो होता है वही यथार्थ प्रेम होता है। आप सभी का प्रेमरस बापदादा को भी खींच लाता है। सभी बच्चों के दिल के अन्दर एक आशा दिखाई दे रही है। वह कौन सी? कई बच्चों ने सन्देश भेजा कि आप हमें भी अपने अव्यक्त वतन का अनुभव कराओ। यह सभी बच्चों की आशायें अब पूर्ण होने का समय पहुंच गया है। आप कहेंगे कि सभी सन्देशी बन जायेंगे, लेकिन नहीं। अव्यक्त वतन का अनुभव भी बच्चे करेंगे। लेकिन दिव्यबुद्धि के आधार पर जो अब अलौकिक अनुभव कर सकते हो, वह दिव्य दृष्टि द्वारा करने से भी बहुत लाभदायक, अलौकिक और अनोखा है इसलिए जो भी बच्चे चाहते हैं कि अव्यक्त बाप से मुलाकात करें, वह कर सकते हैं। कैसे कर सकते हैं? इसका तरीका सिर्फ यही है कि अमृतवेले याद में बैठो और यही संकल्प रखो कि अब हम अव्यक्त बापदादा से मुलाकात करें। जैसे साकार में मिलने का समय मालूम होता था तो नींद नहीं आती थी और समय से पहले ही बुद्धि द्वारा इसी अनुभव में रहते थे। वैसे अब भी अव्यक्त मिलन का अनुभव प्राप्त करना चाहते हो तो उसका बहुत सहज तरीका यह है। अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर रूह-रूहान करो। तो अनुभव करेंगे कि सचमुच बाप के साथ बातचीत कर रहे हैं। और इसी रूह-रूहान में जैसे सन्देशियों को कई दृश्य दिखाते हैं वैसे ही बहुत गुह्य, गोपनीय रहस्य बुद्धियोग से अनुभव करेंगे। लेकिन यह अनुभव करने के लिए एक बात आवश्यक है। वह कौनसी? मालूम है? अमृतवेले भी अव्यक्त स्थिति में वही स्थित हो सकेंगे जो सारा दिन अव्यक्त स्थिति में और अन्तर्मुख स्थिति में स्थित होंगे। वही अमृतवेले यह अनुभव कर सकेंगे इसलिए अगर स्नेह है और मिलने की आशा है तो यह तरीका बहुत सहज है। करने वाले कर सकते हैं और मुलाकात का अनोखा अनुभव प्राप्त कर सकते हैं।

वतन में बैठे-बैठे कई बच्चों के दिलों की आवाज पहुंचती रहती है। आप सोचते होंगे – शिवबाबा बहुत कठोर है लेकिन जो होता है उसमें रहस्य और कल्याण है इसलिए जो आवाज पहुंचती है वह सुनकर के हर्षाता रहता हूँ। क्या बापदादा निर्मोही हैं? आप सभी बच्चे निर्मोही हो? निर्मोही बने हो? तो बापदादा निर्मोही और बच्चों में शुद्ध मोह तो मिलन कैसे होगा। बापदादा में शुद्ध मोह है? (साकार बाबा का बच्चों में शुद्ध प्यार था) शिवबाबा का नहीं है? बापदादा का है? (जैसा हमारा है वैसा नहीं) शुद्ध मोह बच्चों से भी जास्ती है। लेकिन बापदादा और बच्चों में एक अन्तर है। वह शुद्ध मोह में आते हुए भी निर्मोही है और बच्चे शुद्ध मोह में आते हैं तो कुछ स्वरूप बन जाते हैं। या तो प्यारे बनते या तो न्यारे बनते। लेकिन बापदादा न्यारे और प्यारे साथ-साथ बनते हैं। यह अन्तर जो रहा हुआ है इसको जब मिटायेंगे तो क्या बनेंगे? अन्तर्मुख, अव्यक्त, अलौकिक। अभी कुछ कुछ लौकिकपन भी मिक्स हो जाता है। लेकिन जब यह अन्तर खत्म कर देंगे तो बिल्कुल अलौकिक और अन्तर्मुखी, अव्यक्त फरिश्ते नज़र आयेंगे। इस साकार वतन में रहते हुए भी फरिश्ते बन सकते हो। आप फिर कहेंगे आप वतन में जाकर फरिश्ता क्यों बनें? यहाँ ही बनते। लेकिन नहीं। जो बच्चों का काम वह बच्चों को साजे। जो बाप का कार्य है वह बाप ही करते हैं। बच्चों को अब पढ़ाई का शो दिखाना है। टीचर को पढ़ाई का शो नहीं दिखाना है? टीचर को पढ़ाई पढ़ानी होती है। स्टूडेन्ट को पढ़ाई का शो दिखाना होता है। शो केस में शक्तियों को पाण्डवों को आना है। बापदादा तो है ही गुप्त।

अभी सभी के दिल में यही संकल्प है कि अब जल्दी-जल्दी ड्रामा की सीन चलकर खत्म हो लेकिन जल्दी होगी? हो सकती है? होगी या हो सकती है? भावी जो बनी हुई है, वह तो बनी हुई बनी ही रहेगी। लेकिन बनी हुई भावी में यह इतना नज़र आता है कि अगर कल्प पहले माफिक संकल्प आता है तो संकल्प के साथ-साथ अवश्य

पहले भी पुरूषार्थ तीव्र किया होगा। तो यह भी संकल्प आता है कि ड्रामा का सीन जल्दी पूरा कर सभी अव्यक्तवतन वासी बन जाएं। बनना तो है। लेकिन आप बच्चों में इतनी शक्ति है जो अव्यक्त वतन को भी व्यक्त में खींचकर ला सकते हो। अव्यक्त वतन का नक्शा व्यक्त वतन में बना सकते हो। आशायें तो हरेक की बहुत हैं। ऐसे ही पहुंचती हैं जैसे इस साकार दुनिया में बहुत बड़ी आफिस होती है टेलीफोन और टेलीग्राफ की, वैसे ही बहुत शुद्ध संकल्पों की तारें वतन में पहुंचती रहती हैं। अच्छा।

आज नये नये बच्चे भी बहुत आये हैं। हाथ उठाओ।

नये बहुत अच्छी कमाल कर सकते हैं क्योंकि इन्हों को समय स्पष्ट देखने में आ रहा है। अभी तो समय का भी सहयोग है, परिस्थितियों का भी सहयोग है। परिस्थितियां भी अब दिखला रही हैं कि पुरुषार्थ कैसा करना है। जब परीक्षायें शुरू हो गयी तो फिर पुरुषार्थ नहीं कर सकेंगे। फिर फाइनल पेपर शुरू हो जायेगा। पेपर के पहले पहुँच गये हो, यह भी अपना सौभाग्य समझना जो ठीक समय पर पहुँच गये हो। पेपर देने के लिए दाखिल हो सके हो। पेपर शुरू हो जाता है फिर गेट बन्द हो जाता है। शुरू में जो आये उन्हों को वैराग्य दिलाया जाता था। आजकल की परिस्थितियां ही वैराग्य दिलाती हैं। आप लोग की धरनी बनने में देरी नहीं है। सिर्फ ज्ञान के निश्चय का पक्का बीज डालेंगे और फल तैयार हो जायेगा। अच्छा।

(इस बार सेवा का टर्न राजस्थान का है)

राजस्थान की महिमा बाप जानते हैं, राजस्थान में रहने वाले कम जानते हैं, बाप जानते हैं कि क्या होने वाला है। जैसे मुख्य केन्द्र राजस्थान में हैं ऐसे आसपास भी जरुर आकर्षण के केन्द्र बनेंगे। वह भी टाइम आयेगा। साकार बाप की पहली-पहली नज़र राजस्थान पर गई, तो जरूर कोई विशेषता होगी ना। समय जब पहुँच जाता है, पर्दा खुल जाता है और दृश्य सामने आ जाता है। राजस्थान को तो नाज़ होना चाहिए, नशा होना चाहिए। राजस्थान से नये-नये सेवा के प्लैन्स निकलने चाहिए। राजस्थान को कोई नई इन्वेन्शन करनी चाहिए। अभी की नहीं है। राजस्थान की धरती का परिवर्तन करना पड़ेगा। उसके लिए बार-बार मेहनत का जल डालना पड़ेगा। लगातार का खाद डालना पड़ेगा। तो ऐसी कोई नवीनता करो जो राजस्थान प्रत्यक्षता का पर्दा खोलने के निमित्त बन जाए।

(सोशल विंग और महिला विंग की मीटिंग है)

सोशल विंग:- सोशल विंग वालों ने जो भी सोशल वर्कर्स हैं उन सबके जो भी स्थान बने हुए हैं, उन्हों को सन्देश दे दिया है? जो भी जिस भी स्टेट से आते हो, उस स्टेट वालों की जिम्मेवारी है कि उस स्टेट में आपके वर्ग का कोई सन्देश से रह नहीं जाए। करते तो हो, बापदादा को मालूम है, चारों ओर प्रोग्राम बने हुए भी होते हैं लेकिन हर स्टेट के जो हर वर्ग वाले हैं उनको कम से कम अपनी स्टेट में ऐसी सेवा करनी चाहिए जो कोई रह नहीं जाये। तो हर स्थान पर कर तो रहे हो, होता रहता है। लेकिन अभी थोड़ा स्पीड तेज करो क्योंकि बापदादा समय की रफ्तार को देख इशारा दे रहा है। बाकी अच्छी सेवा कर रहे हो, मुबारक हो। और भी अच्छे ते अच्छी करते रहेंगे। अच्छा –

मातायें क्या कमाल करेंगी? मेम्बर तो बन गई? महिला वर्ग की मेम्बर हो, अच्छी बात है। जो भी मेम्बर बने हैं, अच्छा किया है। अभी आप सबकी लिस्ट गवर्मेन्ट को भेजेंगे कि इतनी मातायें दुनिया को स्वर्ग बनाने वाली हैं। लेकिन पहले अपने घर को स्वर्ग बनाना फिर विश्व को। तो सभी ने अपने घर को स्वर्ग बनाया है? पहले घर को बनायेंगी तभी दूसरों पर भी प्रभाव पड़ेगा। नहीं तो कहेंगे घर में कलह लगा पड़ा है, स्वर्ग कहाँ है! तो माताओं को ऐसा वायुमण्डल बनाना है जो कोई भी देखे तो यही दिखाई दे कि माताओं ने परिवर्तन अच्छा किया है। अच्छा।

सभी सेन्टर्स के अव्यक्त स्थिति में स्थित हुए नूरे रत्नों को बाप व दादा का अव्यक्त यादप्यार स्वीकार हो। साथ-साथ जो ईशारा दिया है उसको जल्दी से जल्दी जीवन में लाने का तीव्र पुरूषार्थ करना है। अच्छा गुडनाईट। सभी शिव शक्तियों और पाण्डवों प्रति बाप का नमस्ते।